के.रि.पु.बल
शौर्यगाथाएँ

Vol.1

सरदार पोस्ट
एक शौर्य गाथा

सत्य घटनाओं पर आधारित

सरदार पोस्ट

एक शौर्य गाथा

प्रकाशन : पिक्सल टू पिक्सल चित्रांकन : स्टेलौन पब्लिशिंग

Pixel2Pixel
259, 3rd Floor, Hauz Rani,
Opp Max Hospital, Saket,
New Delhi - 110017

www.pixel2pixel.in
info@pixel2pixel.in

Copyright © 2015 Central Reserve Police Force

Printed by Printland Digital (I) Pvt. Ltd. in September, 2015

बँटवारे के बाद, भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा को लेकर तनाव बना रहता था। पाकिस्तानी सेना अक्सर सीमा लांघकर भारतीय क्षेत्र मे घुस आया करती थी। इस मसले को सुलझाने के लिए यह तय किया गया कि दोनों देशों के केन्द्रीय सर्वेक्षण विभाग मिलकर सीमा की निशानदेही करें। सन् 1963 तक पंजाब तथा राजस्थान में सीमा की निशानदेही कर दी गयी मगर गुजरात में सीमा की निशानदेही से पहले ही पाकिस्तानी केन्द्रीय सर्वेक्षण विभाग ने इस संयुक्त कार्यवाही से अपने सदस्य वापिस खींच लिये।

3 मार्च, सन् 1965 को पाकिस्तानी फौज ने कच्छ के रण में हमारी सीमा से करीब 1000 गज़ दक्षिण में कंजरकोट में एक पोस्ट बना दी और उसे हटाने से मना कर दिया।15 मार्च, सन् 1965 को पाकिस्तानी फौज ने डींग में एक और पोस्ट की स्थापना कर दी।

पाकिस्तान के आक्रमक इरादों को भांपकर भारत ने उनकी गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए कंजरकोट से तकरीबन 4600 गज़ दक्षिण पश्चिम में 'सरदार पोस्ट' तथा डींग से तकरीबन 1000 गज़ पर 'टॉक पोस्ट' की स्थापना की। इन दोनों सीमा चौकियों पर के०रि०पु०बल की द्वितीय बटालियन की चार कम्पनियों को तैनात किया गया।

8 अप्रैल 1965, मेजर करनैल सिंह के बुलावे पर टॉक पोस्ट के कमांडर श्री ब्रिजेश उनसे मिलने सरदार पोस्ट पहुँचे।

दोनों टेन्ट की तरफ चल दिये।

वैल्कम ब्रिजेश।
जय हिन्द, सर!
जय हिन्द, सर!

सर, इस पोस्ट की लोकेशन कुछ समझ में नहीं आई। चारों तरफ फ्लैट ऐरिया है सर।

यह पोस्ट दुश्मन पर नज़र रखने के लिये बहुत जरूरी है।

रिस्क है, पर सी.आर.पी. खतरों से कब डरी है।
RANN OF

लुक एट दिस!
पाकिस्तान ने घुसपैठ करने के लिये दो स्टैंडिंग पोस्ट बनाई है। कंजरकोट और डींग।

और उसके जवाब में हमनें सरदार पोस्ट और टॉक पोस्ट खड़ी की है।
NN OF

पाकिस्तान के लिये रण पर कब्जा करने का एक ही रास्ता है... सरदार पोस्ट

और हमारे रहते हुए वो यहाँ से निकल नहीं सकते।

बिल्कुल ठीक सर।

श्री ब्रिजेश की तरफ मुड़ते हुए।
ब्रिजेश, दुश्मन की तरफ से कोई मूवमेन्ट की खबर है? मैंने वही डिस्कस करने के लिये तुम्हे यहाँ बुलाया है।

यस सर।

जय हिन्द, सर।

आपके लिये हेड्क्वॉर्टर से वायरलैस पर मेसेज है सर।

Excuse me, Gentlemen
मैं अभी आता हूँ।

नेजर करनैल सिंह सिग्नल सेन्टर की तरफ जाते हैं।

लंगर में खाने का समय हो चुका था।

ले भाई हुड्डा,
एक रोटी मेरी ओर से।

थेन्कू हैं भाई।
भाई हुड्डा,
अंग्रेज चले गये पर तुझे
छोड़ गये।

हुड्डा की अंग्रेजी से अंग्रेज भी डरते हैं।
कुछ हो जाये हुड्डा?

स्कूल में मैंने अंग्रेजी में टॉप कर रखा है। भाई बात ऐसी है एक बार मास्टर जी ने सबको फेल कर दिया...

मुझे पूछा कि बता "इधर आ" को
अंग्रेजी में क्या कहते हैं।

मैंने कहा
"कम हेअर"।
बहुत बढ़िया!
फिर?

फिर मास्टर जी ने कहा कि अब
बता "उधर जा" को अंग्रेजी में क्या
कहते हैं?

मैं कूद के उधर चला गया।

और कहा "कम हेयर"।
हा...हा...हा...हा...

हा...हा...हा...हा... भाई हुड्डा, तुझे तो नौटंकी में होना चाहिये था।

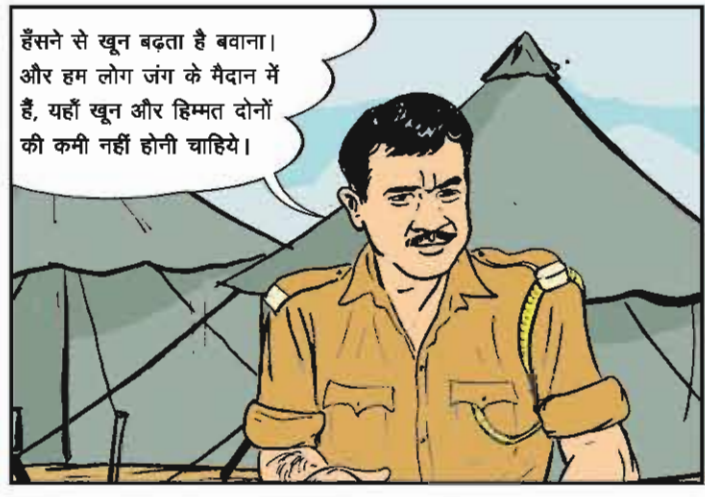
हँसने से खून बढ़ता है बवाना। और हम लोग जंग के मैदान में हैं, यहाँ खून और हिम्मत दोनों की कमी नहीं होनी चाहिये।

वाह भई वाह! हुड्डा कि गल्ल कई है। तबीयत खुश कर दी...

अरे बलबीर साहब। आप कब आए?

तुम लोग मुझे देखकर इतना खुश क्यों हो रहे हो...

अच्छा अब समझा, तुम लोगों को भी पता चल गया कि मैं तनख्वाह लेकर आया हूँ।

यह तो बहुत बढ़िया है, अब तो रणजीते को दावत देनी पड़ेगी।
क्यों भई? क्या कोई जंग जीती है?
अरे भई सी.आर.पी. तो जंग हर रोज जीतती है। पर रणजीते के यहाँ पहली बार लड़की पैदा हुई है।
वाह भई वाह! रणजीते मुबारक हो! मुबारक हो!
मैं एक बात बताऊँ रणजीते, यह लड़की तेरा नसीब बदल देगी।
अरे! अब क्या तेरे मुँह में दही जम गई, अरे! अब तो दावत के लिये हामी भर दे रणजीते।
लो हमने कब मना किया दावत के लिये।
अरे यार मैं नहीं आ सकता, मुझे टॉक पोस्ट पर वापिस जाना है।
गई भैंस पानी में! बलबीर साहब के बिना दावत का क्या मज़ा है?

मेजर करनैल सिंह हेड्क्वॉर्टर बात करने के बाद टैन्ट से बाहर निकलते हैं जहाँ श्री ब्रजेश उनका इन्तज़ार कर रहे हैं।

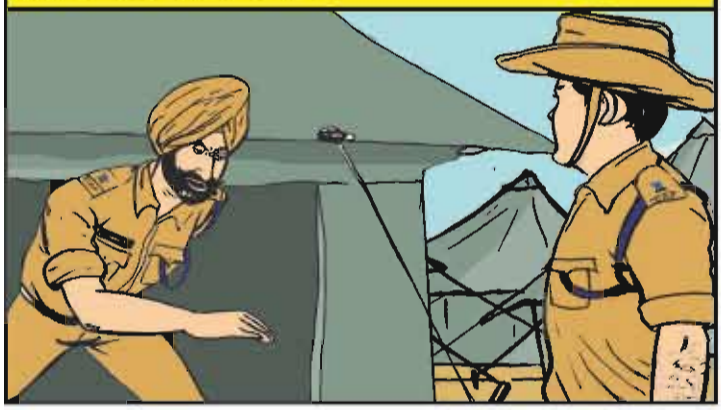

इधर टॉक पोस्ट पर रात 2 बजे सूबेदार सुब्बा पेट्रोलिंग पार्टी के साथ।

जय हिन्द सर, 2 एसओएस और 80 जवान नाईट पेट्रोलिंग के लिये तैयार है सर।

सुबह, दुश्मन के इलाके में मूवमेंट की खबर है। नाईट पेट्रोल पर सतर्क रहना।

यस सर।

सूबेदार सुब्बा पार्टी को मार्च करने का हुक्म देते हैं।

निलगुड्डे आज ऑब्जरवेशन टॉवर पर किसकी ड्यूटी है?

2 बजे तक विश्वनाथ सिंह की है, उसके बाद सोमनाथ यादव की ड्यूटी है सर।

सावधान रहना।

यस सर।

इधर सरदार पोस्ट पर रात 2 बजे हवलदार रणजीत सिंह मोर्चे पर संतरी को बदली करने के लिये पहुँचते हैं।

हवलदार रणजीत ने संतरी को बदली कर मोर्चा संभाल लिया।

उधर पेट्रोलिंग पर निकली पार्टी रात के अँधेरे में आगे बढ़ रही थी।

सरदार पोस्ट रात 0330 बजे। हवलदार रणजीत सिंह को उसके मोर्चे के सामने कुछ हलचल दिखाई दी।

रणजीत सिंह ने अजनबी को चेतावनी दी।

कुछ समय तक दूसरी ओर से कोई जवाब नहीं आया। रणजीत सिंह के दुबारा पूछने पर उस पर गोलियों की बौछार कर दी गई।

जमकर गोली बारी होने लगी।

पोस्ट पर भी तोप के गोले बरसने लगे। युद्ध छिड़ चुका था।

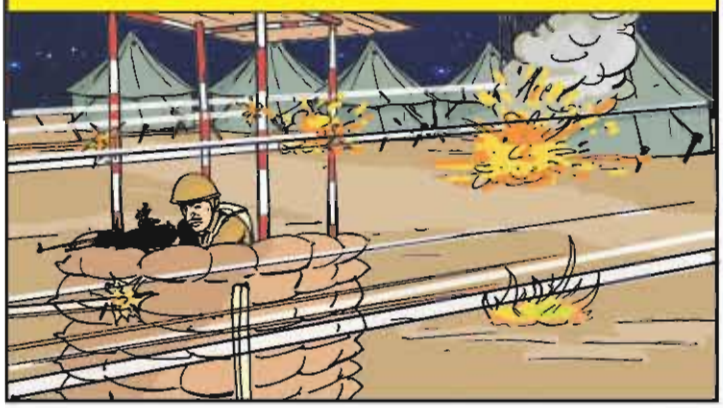

हमारे जवानों ने भी मोर्चे संभाल लिये और डटकर दुश्मन का सामना करने लगे।

भारी गोलीबारी और मोर्टार शेलिंग के बीच हमारे जवानों ने दुश्मन पर जवाबी फायरिंग शुरू कर दी।

मेज़र करनैल सिंह भागकर रणजीत सिंह के पास मोर्चे में पहुँचे।

पोस्ट से दूर पेट्रोलिंग पार्टी अभी भी आगे बढ़ रही थी।

तभी अचानक एक गोला उनके सामने आकर गिरा।

सभी ने तुरंत पोजीशन ले ली।

मेजर करनैल सिंह, रणजीत सिंह के मोर्चे से निकलकर जवानों के पास आ गये और उन्हें बहादुरी से लड़ने के लिये प्रोत्साहित करने लगे।

इसी बीच पाकिस्तानी फौज एम एम जी और 25 पोंडेर तोपों से सरदार पोस्ट पर लगातार हमला कर रही थी।

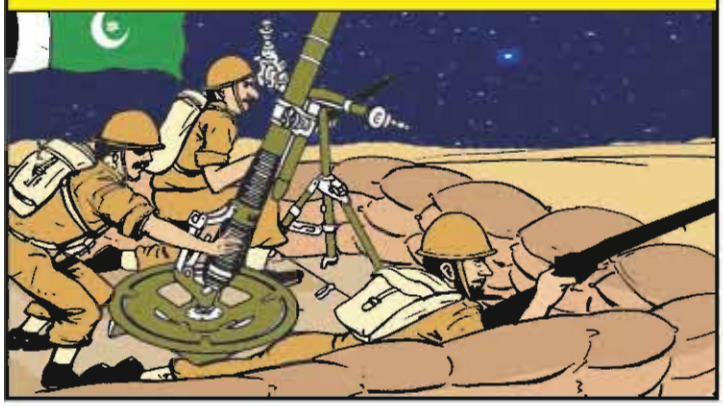

तब तक कास्टेबल गीलगुड्डे टॉक पोस्ट पहुँच जाता है।

जय नारायण हमें वापिस पहुँचना ही होगा। पोस्ट पर आदमी कम हैं। वहाँ हमारी जरूरत है।

लेकिन सर इतने अंधेरे में हम रास्ता ढूँढेंगें कैसे। दोनों तरफ से तो फायरिंग हो रही है। हमारे साथी हमें ही दुश्मन समझ सकते हैं सर।

दूर ऑब्जरवेशन पोस्ट को देखकर।

हाँ सर, देखिये सामने ऑब्जरवेशन टावर है।

यह रास्ता टॉक की तरफ जाता है ना?

नीचे उतर जाओ टावर गिराना जरूरी है। नीचे उतर जाओ।

कांस्टेबल नीलगुड्डे टावर उड़ाने के लिये उसके नीचे बारूद लगाता है।

चलो, चलो! हो गया।

फायर...

लगता है, कनेक्शन में प्राब्लम है।

तुम यहीं ठहरो। सब की जान खतरे में डालने की कोई जरूरत नहीं है। मैं देखता हूँ।

तब तक टॉक पोस्ट के कनांडर श्री ब्रिजेश भी वहाँ पहुँच जाते है।

कांस्टेबल नीलगुड्डे अपनी जान की परवाह ना करते हुए कनेक्शन चेक करने के लिये टावर की तरफ चल दिये।

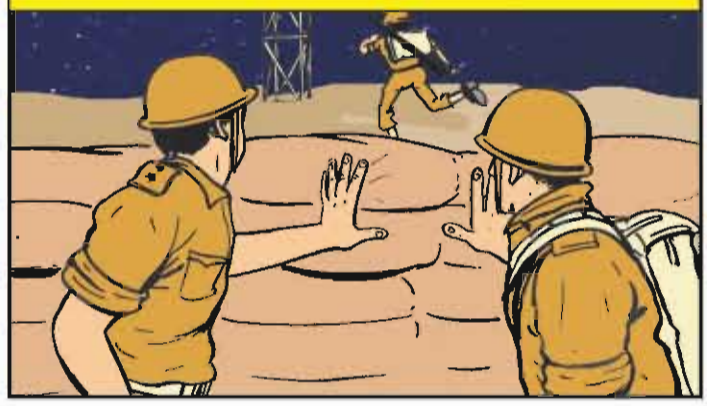

तभी एक गोला उनके करीब आकर फटा।

कांस्टेबल नीलगुड्डे ने घायल होने के बावजूद हिम्मत नहीं हारी। वह उठे और फिर से टावर की तरफ चल दिये।

टावर पर पहुँच कर उन्होंने दोबारा विस्फोटक लगाया।

बटन के दबते ही ऑब्जरवेशन टावर उड़ गया।

इधर पेट्रोल पार्टी बुरी तरह फँस चुकी थी। वे वायरलेस से अपनी पोस्ट से सम्पर्क करने की कोशिश करने लगे।

इधर टॉक पोस्ट पर।

सरदार पोस्ट से 600 गज पश्चिम पर दुश्मन का मोर्टार गन है! हिट इट!

दिशा एक आठ सिफर डिग्री, ऊँचाई सात–पाँच डिग्री, चार्ज इट। फायर...

सूबेदार बलबीर द्वारा दागे गए गोले ठीक उसकी जुबान की तरह अचूक निशाने पर लगते हैं और पाकिस्तानी मोर्टार को ध्वस्त कर देते हैं।

शाबाश बलबीर सिंह
मार दिया सर, चक दिते फट्टे सर।

वाहे गुरू जी दी मेहर है सर। गोला और जुबान हमेशा निशाने पर सर।

इधर सरदार पोस्ट पर मेजर करनैल सिंह कोत पहुँचते हैं।
असले की क्या पोजीशन है डेविड ?
सर, पाकिस्तानी फोर्स की पूरी ब्रिगेड का हमला है। कम से कम 3500 आदमी हैं जिन्हें पूरा आर्टिलरी सपोर्ट है। और सर हम सिर्फ एक पुलिस फोर्स हैं।

डेविड मेरा सवाल था हमारे पास कितना गोला बारुद है?

वही सर। पूरी पाकिस्तानी ब्रिगेड को रोकने के लिये यह गोलाबारूद काफी नहीं होगा।
डेविड, जंग सिर्फ गोला और बारूद से नहीं बल्कि हौसले और दिमाग से जीती जाती है।

PARADE STMT
ASON
और एक बात डेविड। तुम्हारा जवान वही सोचेगा जो तुम सोचोगे। और हम जीत के सिवा कुछ नहीं सोच सकते।
यस सर।

लगता है यह रात हमारे इम्तिहान की रात है।

मेजर करनैल सिंह कुछ क्षण के लिए चुप होकर सोचने लगे।

ASON
फायरिंग बन्द कर दो।
फायरिंग बन्द कर दें सर?

हाँ, फायरिंग बन्द कर दो।

फिर तो दुश्मन आगे बढ़ता जायेगा। हम उन्हे रोकेंगे कैसे?
रोकेंगे डेविड, बिल्कुल रोकेंगे! और ऐसा रोकेंगे कि फिर वो दुबारा उठ नहीं पायेंगे।

पहला फायर हुड्डू राम के मोर्चे से होगा। और वही हमारा फायर ओपन करने का इशारा होगा।
सर!

हवलदार रणजीत सिंह डटकर दुश्मन का मुकाबला कर रहे थे।

तभी पीछे से एक सिपाही उनके मोर्चे में दाखिल होता है।

फायरिंग रोक दो।

फायरिंग रोक दो।

सरदार पोस्ट से फायरिंग रोक दी जाती है। रेगिस्तान में गहरा सन्नाटा छा जाता है।

लगता है कुछ गड़बड़ है। हमारी तरफ से फायरिंग बंद हो गई है।

यह तो बहुत बुरी खबर है साहब। दुश्मन की पूरी ब्रिगेड के आगे हम कर भी क्या सकते हैं साहब।

नहीं जय नारायण, मुझे लगता है कि मामला कुछ और है।

एक बंकर में मेजर करनैल सिंह, डेविड तथा हुड्डू खान पाकिस्तानी फौज को आगे बढ़ते देख रहे थे।

यह सोचकर कि उसने सरदार पोस्ट पर मौजूद सभी भारतीय सैनिकों को या तो मार दिया है या फिर घायल कर दिया है, पाकिस्तानी फौज बेखौफ आगे बढ़ने लगी।

कुछ पाकिस्तानी जवान सी.आर.पी. के मोर्चे के बहुत करीब आ गए।

मेजर करनैल सिंह, हुड्डू राम और डेविड पाकिस्तानी सैनिकों को और नजदीक आते देखते रहे।

हमारे जवानों ने फायर खोल दिया तथा आगे बढ़ती पाकिस्तानी फौज को अचंभे में डाल दिया। इस अचानक हमले से पाकिस्तानी फौज के पांव उखड़ गये और उनको भारी नुकसान उठाना पड़ा।

उधर पेट्रोलिंग पार्टी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी।

कांस्टेबल नीलगुड्डे अपनी पेट्रोलिंग पार्टी को दुश्मन समझकर अपनी राइफल तान लेता है।

आओ दोस्त।

इस तरह पेट्रोलिंग पार्टी को वहाँ से निकाल लिया गया।

साहब, यह तो बहुत पास आ गये हैं।

आने दो, और करीब आने दो। अब मेहमान नवाज़ी का पूरा मज़ा आयेगा।

इधर सरदार पोस्ट में पीछे के मोर्चे पर...

फायर...

इस हमले में कुछ पाकिस्तानी सैनिक मारे गये और चार को जिन्दा पकड़ लिया गया।

ले चलो इन्हें।

एक दूसरे मोर्चे में हुड्डू राम अपनी मशीनगन से दुश्मन पर फायर कर रहा था। तभी उसकी मशीनगन जाम हो गई। वह उसे ठीक करने की कोशिश करता है।

अरे! यह क्या हो गया?

तुझे भी अभी जाम होना था?

तभी अचानक दुश्मन की तरफ से उस पर गोलियों की बौछार होती है।

और एक पाकिस्तानी सैनिक कूदकर उनके मोर्चे में आ जाता है।

हुड्डू राम उससे भिड़ जाता है और उसे उठाकर नीचे पटक देता है।

देखते ही देखते कुछ और पाकिस्तानी सैनिक वहाँ पहुँच जाते हैं।

और उनमें से एक उस पर गोली चला देता है। गोली उसकी टाँग में लगती है।

मेजर करनैल सिंह को इस तरफ आते देख पाकिस्तानी सिपाही उन पर फायर खोल देते हैं। लेकिन हवलदार हुड्डू राम भागकर उनके सामने आ जाता है और सारी गोलियाँ अपने सीने पर झेल लेता है।

इधर टॉक पोस्ट पर श्री ब्रिजेश हेडक्वॉर्टर से सम्पर्क करते हैं।

इधर सरदार पोस्ट पर डेविड, बवाना राम तथा कुछ अन्य सैनिक हुड्डू रान के पास पहुँचते है और उन्हे घायल पाते हैं।

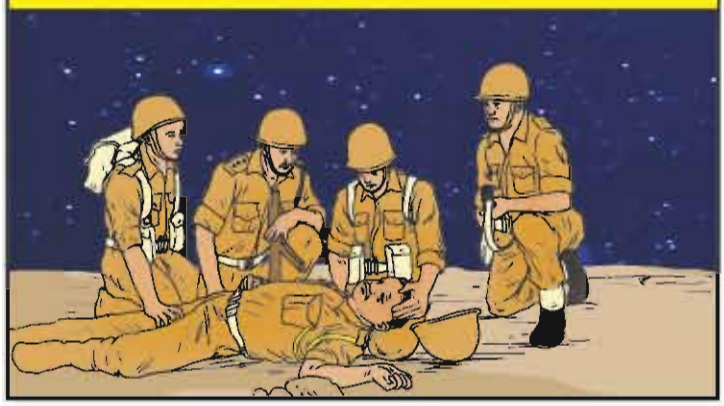

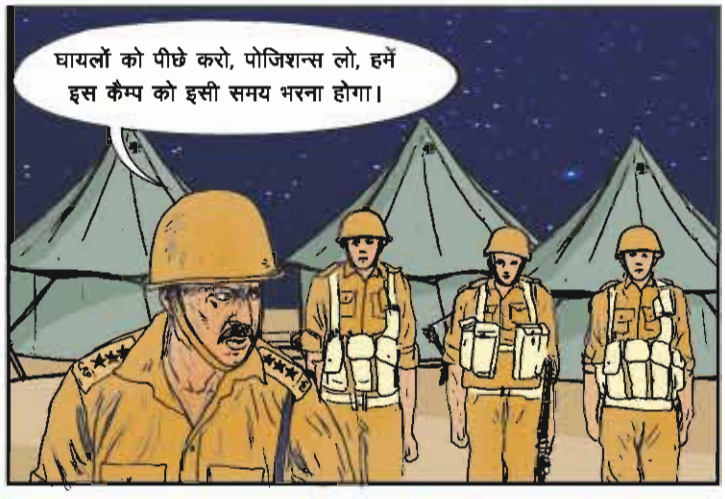

यह बहुत मुश्किल काम है। अगर एम्यूनेशन वक्त पर नहीं आया तो...
एम्यूनेशन वक्त पर आयेगा सर।

हवलदार बवाना राम दुश्मन की ओर हथगोले फेंकने लगते हैं।

इधर कांस्टेबल शिवराम गोलियों और धमाकों से बचता हुआ गोला बारूद लेने के लिये निकल पड़ता है।

वह भारी गोलाबारी के बीच अपनी जान की परवाह किये बगैर आगे बढ़ता है।

इधर हवलदार बवाना राम हथगोले से दुश्मन को भारी क्षति पहुँचा रहा था।

कांस्टेबल शिवराम ने कोत पहुँचकर उन्हे एम्यूनेशन को तुरन्त मोर्चे तक पहुँचाने के लिये कहा।
रणजीत सिंह के मोर्चे पर एम्यूनेशन चाहिये सर।
एम्यूनेशन खत्म है।

अपनी कोत में संदेश देने के बाद वह टॉक पोस्ट की तरफ निकल पड़ा।

टॉक पोस्ट से कुछ दूर एक गोली उसकी दाहिनी बाजू में लग गई और वह गिर पड़ा।

इधर रणजीत सिंह के मोर्चे पर।

कुछ ही गोलियां बची है सर। एक गोली एक दुश्मन... यहहहहह!!!!

आप कहाँ हो शिवराम ?

गोलियाँ खत्म हो गई है सर अब क्या करें ?

घायल शिवराम उठने की कोशिश करता है।

आह! मुझे हिम्मत दो माँ, मुझे आज किसी भी हालत में टॉक पहुँचना है।

जय भवानी माँ।

इधर सरदार पोस्ट पर।

यह लो बवाना। सारे ग्रेनेड इकट्ठे करके ले आया हूँ।

बस!

यह आखिरी खेप है। इसी से काम चलाना पड़ेगा।

बहुत हैं। सारे इसी में निपट जायेंगे।

हवलदार बवाना रान ग्रेनेड हाथ में लेता है और उसमें से पिन निकालता है।

और वह ग्रेनेड दुश्मन की तरफ उछाल देता है।

उधर कान्सटेबल शिवराम घायल अवस्था में टॉक पोस्ट पहुँच जाता है।

मेरी आँख फड़क रही है सर, मुझे तो जाना ही होगा।
सर मुझे भी थोड़ा हिसाब बराबर करना है। मैं भी जाऊँगा सर।
एम्यूनेशन लोड करो और गाड़ी निकालो।
चलो। जल्दी चलो। हमें वहाँ जल्दी पहुँचना होगा।
भारी गोलाबारी तथा शेलिंग के बीच सूबेदार सुब्बा और कुछ अन्य सैनिक सरदार पोस्ट की तरफ चल पड़े।
लगता है टॉक पोस्ट से एम्यूनेशन आ गया है।
साहब लगता है जीप किशन सिंह चला रहा है। एम्यूनेशन जरूर पहुँचेगा साहब।
दाहिने लो दाहिने।
धत तेरी की अब इसको क्या हो गया?
अभी स्टार्ट हो जायेगी साहब जी आप चिन्ता ना करो।

जीप स्टार्ट हो जाती है।
Good चलो।

यस। यस! आ जाओ।

भारत माता की जय! भारत माता की जय!

भारत माता की जय! भारत माता की जय!

एम्यूनेशन आ गया है जवानों।

सभी मिलकर जीप से एम्यूनेशन उतारते है और मोर्चों तक पहुँचाते हैं।

बायें मोर्चे पर मोर्टार लेकर जाओ। जल्दी।

चारों तरफ एम्यूनेशन पहुँचाओ। बता दो पाकिस्तानियों को कि सरदार पोस्ट को पार करना कोई आसान काम नहीं है।

भारत माता की जय...
जय!
जय!

एम्यूनेशन के पहुँचते ही डेविड फिर से रणजीत सिंह के मौर्चे में आ जाते हैं।

हमलें में आई तीव्रता से पाकिस्तानी फौज में खलबली मच गई।

पाकिस्तानी सैनिक पीठ दिखाकर भागने लगे।

दुश्मन पीछे हट रहा है। छोड़ना मत।
साहब हुड्डा ने ठीक कहा था।

लड़की पैदा हुई है, हमारा नसीब बदल देगी। नसीब बदल गया साहब, नसीब बदल गया।

पाकिस्तानी फौज रुक-रुक कर हमला करती रही।

मगर हमारे वीर जवानों ने कम हथियार और गोलाबारूद होने के बावजूद उनके हर हमले का मुँह तोड़ जवाब दिया। भागती हुई पाकिस्तानी सेना अपने 34 सैनिकों की लाशें पीछे छोड़ गयी।

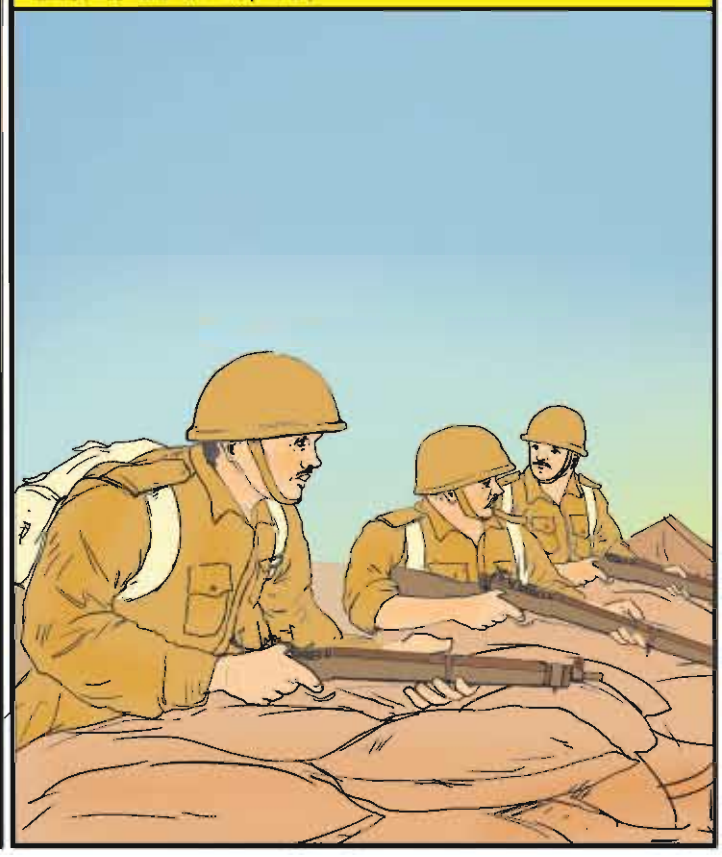

शाम 5 बजे (लगभग 12 घंटे), जब तक कि भारतीय सेना की टुकड़ियाँ वहाँ नहीं पहुँची, पाकिस्तानी फौज को कैम्प के नजदीक भी नहीं फटकने दिया।

यह एक अनोखी जंग थी, एक ऐसी जंग जिसमें चन्द सौ सी.आर.पी.एफ जवानों ने 3500 मजबूत पाकिस्तानी ब्रिगेड के दाँत खट्टे कर उनको पीछे धकेल दिया था। हर साल सी.आर.पी.एफ इस ऐतिहासिक दिवस को "शौर्य दिवस" के रूप में मनाती है।

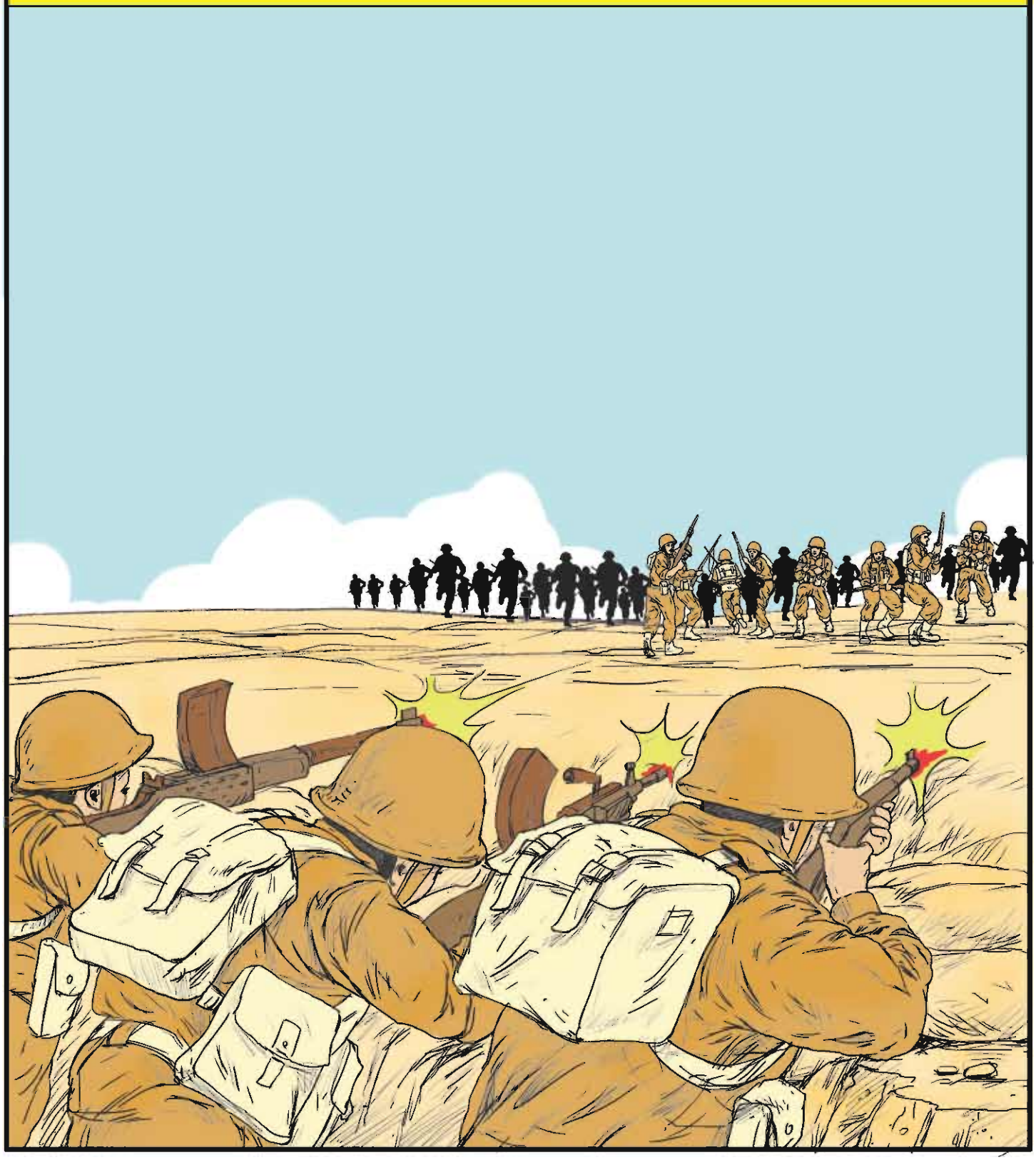

समाप्त

9 अप्रैल, 1965 को के.रि.पु.बल के बहादुर जवानों द्वारा राष्ट्र के सैन्य इतिहास में एक शानदार अध्याय लिखा गया, जब दूसरी बटालियन के.रि.पु.बल की मात्र 2 कम्पनियों ने 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान एक भारी–भरकम पाकिस्तानी ब्रिगेड के हमले का डट कर सामना किया और उन्हें भारी क्षति पहुंचाते हुए उनके हमले को विफल कर दिया।

श्री गुलजारी लाल नंदा, तत्कालीन गृहमंत्री ने यह अभ्युक्ति दी थी –**"यह युद्ध न केवल भारतीय पुलिस के इतिहास में दर्ज किया जाएगा बल्कि सैनिक युद्ध के इतिहास में भी अंकित रहेगा।"**

इन वीर जवानों द्वारा रची गयी यह शौर्य गाथा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकाश स्तंभ का कार्य करती रहेगी। हम केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में इस शौर्य गाथा को याद कर हर वर्ष 9 अप्रैल को **"शौर्य दिवस"** के रूप में मनाते हैं।

आज भी सी.आर.पी.एफ. मुख्यालय में एक कलश में रखी सरदार पोस्ट की पावन मिट्टी बल के कार्मिकों के लिए प्रेरणा स्रोत बन उन्हे देश सेवा के प्रति पुनः संकल्पित होने को प्रेरित करती है।

सरदार पोस्ट के अमर शहीद

9 अप्रैल, 1965 को गुजरात के रण आफ कच्छ में स्थित सरदार पोस्ट पर लड़ी गई लड़ाई और अनेक कारणों के अतिरिक्त, इस पोस्ट पर तैनात केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल के सैनानियों के अपूर्व साहस, वीरता और दिलेरी के लिये भी याद की जाती है। यह युद्ध इसलिए भी याद किया जाता है, कि किस प्रकार एक छोटी सी पुलिस टुकड़ी बहुत थोड़े से हथियारों और गोला बारूद के बावजूद अपनी सूझबूझ और साहस के बूते पर अपनी जान की परवाह न करते हुये एक बड़ी फौज के हमले को विफल कर देती है। अपने इस प्रयास को सफल करने में अपने प्राणों पर खेल गये केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल के अमर शहीद।

नं0 1885 नायक किशोर सिंह
2 बटालियन

15 अक्टूबर, 1937 में सीकर राजस्थान में जन्में किशोर सिंह 20 दिसम्बर, 1963 को के.रि.पु.बल परिवार में शामिल हुए। नायक किशोर सिंह 9 अप्रैल, 1965 को रण ऑफ कच्छ की सरदार पोस्ट पर एक पाकिस्तानी ब्रिगेड का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

नं0 1449 लान्स नायक गणपत राम
2 बटालियन

12 मई, 1919 को हरियाणा के गुड़गाँव में जन्में गणपत राम 9 मई, 1948 को के.रि.पु.बल परिवार में शामिल हुए। लान्स नायक गणपत राम 9 अप्रैल, 1965 को रण ऑफ कच्छ की सरदार पोस्ट पर एक पाकिस्तानी ब्रिगेड का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

नं0 1507 कान्स्टेबल ज्ञान सिंह
2 बटालियन

9 अप्रैल, 1930 को कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में जन्में कान्स्टेबल ज्ञान सिंह 9 अप्रैल, 1949 में के.रि.पु.बल परिवार में शामिल हुए। कान्स्टेबल ज्ञान सिंह 9 अप्रैल, 1965 को रण ऑफ कच्छ की सरदार पोस्ट पर एक पाकिस्तानी ब्रिगेड का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

नं0 1939 कान्स्टेबल शमशेर सिंह
2 बटालियन

22 अप्रैल, 1936 को कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में जन्मे शमशेर सिंह 12 मई, 1960 को के.रि.पु.बल परिवार में शामिल हुए। कान्स्टेबल शमशेर सिंह 9 अप्रैल, 1965 को रण ऑफ कच्छ की सरदार पोस्ट पर एक पाकिस्तानी ब्रिगेड का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

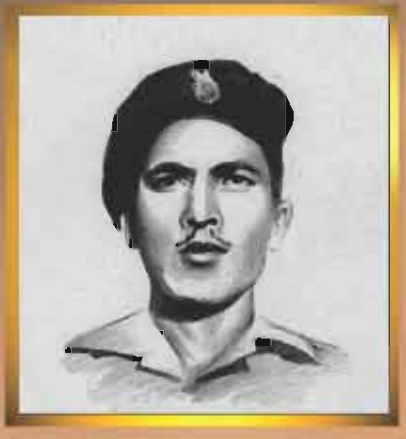

नं0 1422 कान्स्टेबल किशन सिंह
2 बटालियन

1 अप्रैल, 1928 को कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में जन्में किशन सिंह 1 अप्रैल, 1948 को के.रि.पु.बल परिवार में शामिल हुए। कान्स्टेबल किशन सिंह 31 जुलाई, 1965 को रण ऑफ कच्छ में भारत पाक युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए।

सम्मान सूची

कृतज्ञ राष्ट्र ने इस शौर्य गाथा में असाधारण वीरता और साहस का परिचय देने के लिए इन वीरों को वीरता के पदकों से सम्मानित किया।

राष्ट्रपति के पुलिस और फायर सर्विस पदक

1. पुलिस उपाधीक्षक ब्रजेश चन्द्र महरेष
2. पुलिस उपाधीक्षक डी.एस.पॉल
3. सूबेदार कबीरमन सुब्बा
4. हैड कान्स्टेबल रणजीत सिंह
5. कान्स्टेबल विश्वनाथ सिंह
6. कान्स्टेबल माखन लाल दत्त
7. कान्स्टेबल शियो राम

वीरता के पुलिस पदक

1. सूबेदार बलबीर सिंह
2. जमादार जय नारायण सिंह
3. हैड कान्स्टेबल बवाना राम
4. हैड कान्स्टेबल महादेव नीलगुड्डे
5. कान्स्टेबल सुच्चा सिंह
6. कान्स्टेबल किशन सिंह
7. कान्स्टेबल मुन्नी सिंह